SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र के लोक संगीत पर समकालीन संगीत का प्रभावः परंपरा और परिवर्तन पर अध्ययन

डॉ. कंचन जैन, शिक्षाशास्त्र विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय

शोध सार

अवध क्षेत्र, जो उत्तर प्रदेश का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र है, अपनी समृद्ध लोक संगीत परंपरा के लिए जाना जाता है। यहाँ की लोक संगीत शैलियाँ, जैसे कि सोहर, कजरी, चौती, और बिरहा, पीढ़ियों से चली आ रही हैं और क्षेत्रीय संस्कृति और सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग हैं। वैश्वीकरण और मीडिया के विस्तार के कारण, अवधी लोक संगीत समकालीन संगीत के विभिन्न रूपों से प्रभावित हो रहा है यह शोध अवधी लोक संगीत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में मदद करेगा। यह समकालीन संगीत के साथ लोक संगीत के सह–अस्तित्व को भी उजागर करेगा और यह दिखाएगा कि कैसे दोनों एक–दूसरे को समृद्ध कर सकते हैं। यह शोध विद्वानों, संगीतकारों, और सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं के लिए भी उपयोगी होगा जो भारतीय लोक संगीत में रुचि रखते हैं। यह शोध अवध क्षेत्र की समृद्ध लोक संगीत परंपरा को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में मदद करेगा। यह समकालीन संगीत के साथ लोक संगीत के सह–अस्तित्व को भी उजागर करेगा और यह दिखाएगा कि कैसे दोनों एक–दूसरे को समृद्ध कर सकते हैं।संगीत मानव मन की भावनाओं को मधुरता से अभिव्यक्त कर देता है। भारतीय लोक संगीत प्रकृति की अनूठी देन है। विभिन्न प्रांत तथा क्षेत्रों में उत्सवों त्योहारों एवं अवसरों पर गाए जाने वाले गीतों के माध्यम से मनुष्य अपने भावनाओं को व्यक्त कर लोगों में उमंग, सुख, उल्लास व प्रसन्नता के भाव से भर देता है। वह लोक संगीत कहलाता है। मनुष्य ने आदिम सभ्यता से ही भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किसी न किसी रूप में संगीत का आश्रय लिया हैं, अपने विरह, हर्ष, प्रसन्नता आदि समस्त गतिविधियों में संगीत किसी न किसी रूप में सहयोगी बना और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं में संगीत की इस महत्वपूर्ण भूमिका ने लोक संगीत का रूप धारण किया। आदिमानव पशु – पक्षी, कीड़े – मकोड़े आदि के स्वरों

© Shodh Patra

से पहले से ही परिचित रहे है, और उनके स्वरों को मिलाने का भी प्रयास करते रहे है कभी पक्षियों की चहचहाने से तो कभी झरनों की कल – कल की ध्वनि से। उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र के लोकगीतों का क्षेत्र बहुत विस्तृत है जिसमें हमें वहां की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों की झलक देखने को मिलती है। यहां का लोक संगीत सामाजिक मूल्य, क्षेत्रीय विविधताओं और ऐतिहासिक विकास को प्रदर्शित करता है। उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में विभिन्न धर्मों के लोग निवास करते हैं जिस कारण यहां विभिन्न भाषाओं तथा गांव से लेकर शहरों तक गाने बजाने के तौर तरीकों में बदलाव देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द – लोक संगीत, समकालीन संगीत, अवध क्षेत्र।

उद्देश्य

- अवध क्षेत्र के पारंपरिक लोक संगीत की विभिन्न शैलियों का अध्ययन करना।
- समकालीन संगीत के विभिन्न रूपों का अवधी लोक संगीत पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना।
- परंपरा और परिवर्तन के बीच की गतिशीलता को समझना और यह देखना कि कैसे लोक संगीत अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखते हुए समकालीन प्रभावों को अपना रहा है।
- अवधी लोक संगीत के संरक्षण और प्रचार के लिए रणनीतियों का सुझाव देना।

प्रस्तावना

उत्तर प्रदेश का अवध क्षेत्र अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है, जिसमें लोक संगीत एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अवध के लोक संगीत में सदियों से चली आ रही परंपराओं का अनूठा मिश्रण है, जो इस क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवनशैली को दर्शाता है। हाल के दशकों में, समकालीन संगीत के प्रभाव ने अवध के लोक संगीत में कई बदलाव लाए हैं। यह शोध पत्र अवध के लोक संगीत पर समकालीन

 © Shodh Patra

संगीत के प्रभाव का अध्ययन करता है, जिसमें परंपरा और परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया है।

- **डॉ0 राजेंद्र प्रसाद के अनुसार** – आधुनिक जीवन को सुंदर बनाने व समृद्ध संपन्न बनाने के लिए लोक संगीत सहायक सिद्ध होगा।
- **पंडित ओंकार नाथ ठाकुर के शब्दों में** – देसी संगीत की पृष्ठभूमि ही लोक संगीत है।
- **रविंद्रनाथ टैगोर के अनुसार** संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

मुंडे, रविंद्र अशोकराव (2020) हिंदी सिने संगीत के विकास में लोक संगीत का योगदान निर्देशक ओम प्रकाश भारती, (महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय) प्रस्तुत शोध प्रबंध में सिने संगीत एवं लोक संगीत के अंतर संबंध को स्पष्ट किया गया है जिसमें साहित्य, कला संस्कृति, समाज आदि तत्वों को प्रस्तुत किया गया है। सिने संगीत में लोक संगीत के बदलते स्वरूप लोक संगीतकारों एवं लोकगीत लोक संगीत के अस्तित्व लोक संस्कृति आदि पर शोध कार्य संपन्न किया गया है परंतु उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र के लोक संगीत पर समकालीन संगीत के प्रभाव से संबंधित कोई चर्चा नहीं की गई है।

बेगम निशा (2017) उत्तर भारतीय लोक संगीत में तंत्रीय वाद्यों का प्रयोग विशेष अध्ययन (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय) निर्देशक – सुप्रिया शाह प्रस्तुत शोध प्रबंध में लोक संगीत के उद्भव एवं विकास, द्वितीय अध्याय में वाद्यों की उत्पत्ति एवं विकास तृतीय अध्याय में उत्तर भारतीय लोक संगीत में प्रयुक्त तंत्रीय वाद्य इकतारा तंदूर रबाब, कश्मीरी सितार, रावण हत्था आदि पर चर्चा विस्तार से की गई है। चतुर्थ अध्याय में तंत्रीय वाद्यों के वर्तमान प्रचार प्रसार की स्थिति कठिनाइयां, सुधार एवं सुझाव तथा अंतिम पंचम अध्याय में लोक संगीत के संरक्षण संवर्धन पर विस्तार से चर्चा की गई है, परंतु लोक संगीत पर समकालीन संगीत के प्रभाव की चर्चा नहीं की गई हैं।

सुषमा सैनी (2017) लोक संगीत में निर्गुण काव्य का गायन एक अध्ययन, (दिल्ली विश्वविद्यालय), निर्देशक सुरेंद्र नाथ सोरेन, प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधार्थी द्वारा काव्य एवं लोक संगीत के अर्थ स्वरूप एवं पारंपरिक संबंध का प्रथम अध्याय में विवरण दिया गया है

इसके पश्चात निर्गुण काव्य का उदय ऐतिहासिक पृष्ठभूमि जैसे राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक परिस्थितियों, निर्गुण काव्य की प्रवृत्तियां आदि पर चर्चा की गई है। तृतीय अध्याय में निर्गुण काव्य के कवि एवं उनकी संगीत विशेषताओं पर चर्चा की गई है जिसमें संत कबीर दास संत रविदास, संत दादू दयाल, संत गरीब दास आदि के जीवन एवं रचनाओं पर विस्तार से अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में निर्गुण काव्य की काव्य गत विशेषताओं पर संगीत का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में निर्गुण काव्य के लोक संगीतिक स्वरूप का अध्ययन किया गया है जिसमें लोकगीतो के प्रकार जैसे संस्कार गीत ऋतु गीत उत्साह संबंधी लोकगीत, पारिवारिक संबंधों के लोकगीत, भजन गायन शैली, शब्द गायन शैली, संत आश्रमों में होने वाले सत्संग आदि पर चर्चा की गई है छठे अध्याय में निर्गुण काव्य में लोक संगीत का क्रियात्मक पक्ष जैसे लोक गीत एवं उनकी स्वर लिपियाँ लय एवं ताल, लोक वाद्य तथा अंत में लोक गायकों एवं संतों के साक्षात्कार का वर्णन किया गया है परंतु उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र के लोक संगीत पर समकालीन संगीत के प्रभाव पर कहीं भी चर्चा नहीं की गई है।

अवध का लोक संगीत एक संक्षिप्त अवलोकन

अवध के लोक संगीत में कई प्रकार के गीत और संगीत शैलियाँ शामिल हैं, जिनमें शामिल हैं:

- **सोहर:** यह गीत बच्चे के जन्म के अवसर पर गाया जाता है।
- **कजरी:** यह गीत वर्षा ऋतु में महिलाओं द्वारा गाया जाता है।
- **होली गीत:** यह गीत होली के त्योहार के दौरान गाया जाता है।
- **विवाह गीत:** यह गीत विवाह समारोहों में गाया जाता है।
- **कव्वाली:** यह सूफी भक्ति संगीत है।
- **ठुमरी:** यह एक शास्त्रीय गायन शैली है जो अवध में लोकप्रिय है।

अवध के लोक संगीत में पारंपरिक रूप से ढोलक, हारमोनियम, सारंगी और मंजीरा जैसे वाद्ययंत्रों का उपयोग किया जाता है।

समकालीन संगीत का प्रभाव

समकालीन संगीत, जिसमें बॉलीवुड संगीत, पॉप संगीत और फ्यूजन संगीत शामिल हैं, ने अवध के लोक संगीत पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। इस प्रभाव के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:

- **वाद्ययंत्रों का उपयोग:** समकालीन संगीत में इलेक्ट्रिक गिटार, कीबोर्ड और ड्रम जैसे आधुनिक वाद्ययंत्रों का उपयोग किया जाता है, जिनका उपयोग अब अवध के कुछ लोक संगीतकारों द्वारा भी किया जा रहा है।
- **संगीत की शैली:** समकालीन संगीत की धुनों और लय का उपयोग अवध के कुछ लोक संगीतकारों द्वारा किया जा रहा है, जिससे पारंपरिक लोक संगीत में एक नया आयाम जुड़ गया है।
- **गीतों के बोल:** समकालीन संगीत के गीतों के बोल अक्सर आधुनिक जीवनशैली और सामाजिक मुद्दों को दर्शाते हैं, और इन विषयों को अवध के कुछ लोक गीतों में भी शामिल किया जा रहा है।
- **प्रस्तुति शैली:** समकालीन संगीत की प्रस्तुति शैली, जिसमें मंच प्रदर्शन और वीडियो निर्माण शामिल हैं, ने अवध के लोक संगीतकारों को भी प्रभावित किया है।

परंपरा और परिवर्तन

अवध के लोक संगीत में समकालीन संगीत के प्रभाव से परंपरा और परिवर्तन के बीच एक दिलचस्प गतिशीलता उत्पन्न हुई है। कुछ लोक संगीतकार पारंपरिक शैलियों को संरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं, जबकि अन्य समकालीन संगीत के तत्वों को अपने संगीत में शामिल करके नए प्रयोग कर रहे हैं।

समकालीन संगीत का प्रभाव अवध के लोक संगीत के लिए सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हो सकता है। एक ओर, यह लोक संगीत को अधिक जीवंत और आकर्षक बना सकता है, जिससे यह युवा पीढ़ी के लिए अधिक प्रासंगिक हो सकता है। दूसरी ओर, यह पारंपरिक शैलियों के विलोपन का कारण भी बन सकता है।

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

- **संगीतकारों की भूमिका:** अवध के लोक संगीतकारों को यह तय करना होगा कि वे अपनी परंपराओं को कैसे संरक्षित करते हुए समकालीन संगीत के तत्वों को अपने संगीत में शामिल कर सकते हैं।
- **सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका:** सरकारी और गैर–सरकारी संगठन अवध के लोक संगीत को बढ़ावा देने और संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- **तकनीकी विकास:** तकनीकी विकास, जैसे कि सोशल मीडिया और ऑनलाइन स्ट्रीमिंग, ने अवध के लोक संगीत को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने में मदद की है।

निष्कर्ष

अवध के लोक संगीत पर समकालीन संगीत का प्रभाव एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा है। परंपरा और परिवर्तन के बीच संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है ताकि अवध का लोक संगीत अपनी समृद्ध विरासत को संरक्षित करते हुए आधुनिक दर्शकों के लिए प्रासंगिक बना रहे। यह शोध अवध क्षेत्र के लोक संगीत की समृद्ध विरासत और समकालीन संगीत के साथ इसके गतिशील संबंधों की एक व्यापक समझ प्रदान करेगा। यह लोक संगीत के संरक्षण और प्रचार के लिए आवश्यक रणनीतियों की पहचान करने में भी मदद करेगा।

संदर्भित ग्रंथ

- शर्मा, प्रो . स्वतंत्र भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण, अनुभव पब्लिकेशन प्रयागराज, उत्तर प्रदेश – 2021, पृष्ठ संख्या – 585।
- मित्तल, अंजलि, भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं संगीत, कनिष्क पब्लिकेशन नई दिल्ली, 2003
- शुल्क, डॉ शत्रुघ्न, ठुमरी की उत्पत्ति विकास और शैलियां, हिंदी माध्यम कार्यालय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, 1983।
- सिंह, डॉ वंदना, ब्रज की संगीत परंपरा, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1996

© Shodh Patra

- सक्सेना, डॉ राकेश बाला, ब्रज की देवालयो में संगीत परंपरा, संगीत कार्यालय हाथरस उत्तर प्रदेश।
- जौहरी, डॉ सीमा, सांगीतिक निबंधमाला, पियूष प्रकाशन दिल्ली, 2001
- पाठक, पंव जगदीश नारायण, संगीत निबंध माला, पाठक पब्लिकेशन इलाहाबाद, 1906।
- सिंह डॉक्टर वंदना (1996), ब्रज की संगीत परंपरा, राधा पब्लिकेशन (नई दिल्ली)
- मिश्र पंडित विजय शंकर (2009), भारतीय संगीत के नए आयाम, कनिष्क पब्लिकेशन डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।